Seventeenth Loksabha

>

Ttile:

श्री अनुराग शर्मा (झाँसी) : माननीय अध्यक्ष महोदय, आज बड़े गर्व से मैं कुछ पंक्तियां दोहराना चाहूंगा ।

"दूर फिरंगी को करने की मन में सबने ठानी थी,

चमक उठी सन् 57 में वो तलवार पुरानी थी ।

बुन्देले हर बोलो के मुंह हमने सुनी कहानी थी,

खूब लड़ी मर्दानी वो तो झांसी वाली रानी थी ।"

माननीय अध्यक्ष जी, मैं आज आपसे एक अनुरोध करना चाहूंगा कि आप मेरी पूरी बात सुन लीजिएगा क्योंकि सारा अनुरोध आपसे ही है । आज झांसी की महारानी लक्ष्मीबाई जी की जयन्ती है । मैं एक भारतीय होने के नाते और झांसी और ललितपुर का सांसद होने के नाते आपसे यह अनुरोध करना चाह रहा था …* वर्ष 1857 का जो प्रथम स्वतंत्रता संग्राम हुआ था, इसमें तीन वीरांगनाओं ने हिस्सा लिया था और अपने जीवन का बलिदान किया था । इसमें सबसे पहला नाम जो आता है, वह है हमारी महारानी लक्ष्मीबाई जी, जो झांसी से थीं और उनकी साथी वीरांगना झलकारीबाई तथा रामगढ़ की रानी वीरांगना अवंतीबाई लोधी जी । महारानी लक्ष्मीबाई जी जिनका नाम मणिकर्णिका था और प्यार से उनको सब मनु कहते थे, महारानी शस्त्र और शास्त्र दोनों में ही बहुत काबिल थीं क्योंकि ब्रिटिश ने उनकी झांसी को लेना चाहा तो रानी ने उनके खिलाफ ही युद्ध छेड़ दिया था । …(व्यवधान) महारानी ने अपनी जान दी और ब्रिटिशर्स से लड़ते हुए ग्वालियर के नीचे एक जगह पर उनके जीवन का अंत हुआ । उसके बाद वहीं पर हमारे यहां एक झलकारी बाई थीं जो महारानी की बहुत महत्वपूर्ण योद्धा थीं । झलकारी बाई भी वीरांगना हुईं । यह झांसी के पास एक भोजला गांव से

आती थीं क्योंकि उनकी मां की मृत्यु बचपन में ही हो गयी थी । इसलिए झलकारी वीरांगना को उनके पिता ने ही पाला-पोसा । झलकारीबाई एक लड़के की तरह बड़ी हुईं और सारे शास्त्र में उनको एक ट्रेनिंग मिली और उन्होंने रानी के दुर्गादल को ज्वाइन किया । वह रानी की हमशक्ल थी, तो उसे ब्रिटिशर्स उनको गलती से पकड़ कर ले गए और रानी को झांसी छोड़ कर ग्वालियर से ब्रिटिशर्स से लड़ने का एक मौका मिला । इन सभी की ...* कहीं भी नहीं है ।

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्य, कृपया आप बैठ जाइए ।

मैं आपको एक बात बताना चाहता हूं कि संसद के मामले की चर्चा कभी भी सदन में नहीं होती है । इन सारे विषयों पर आप लिख कर दे दें । इसके लिए एक समिति बनी हुई है । उस समिति की एक प्रक्रिया होती है । आप हिन्दुस्तान के किसी कोने की चर्चा यहां करें, लेकिन संसद की चर्चा न करें । मैं यह माननीय सदस्यों से आग्रह करता हूं ।

...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्य, आप समर्थन कर रहे हैं, लेकिन यह विषय ही नहीं उठना चाहिए । आप सीनियर व्यक्ति हैं ।

माननीय सदस्यगण, संविधान, प्रक्रिया, नियमों को एक बार फिर से पढ़ें । यह मेरा आग्रह है ।

श्री अनुराग शर्मा: सर, मैं लिख कर दे देता हूं ।